हिन्दी (प्र०) खण्ड - द्वितीय (पत्र - तृतीय)

डॉ० संतोष कुमार

हिमाद्रि तुंग शृंग से
- जयशंकर प्रसाद

कवि परिचय :-

जन्म :- 30 जन. ~~1890~~ 1889 ई० (वाराणसी)

मृत्यु :- ~~14 जन. 1937 ई०~~ 15 नव. 1937 ई०

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। वे एक युग प्रवर्तक लेखक थे, जिन्होंने एक साथ कविता, नाटक, कहानी, निबंध और उपन्यास की रचना की। हिन्दी साहित्य के इतिहास में इनके कृतित्व का गौरव अक्षुण्ण है।

ये पहले ब्रजभाषा की कविताएँ लिखा करते थे जिनका संग्रह 'चित्राधार' में हुआ है। वे सन् 1913 ई० (संवत् 1970) से खड़ी बोली में रचना करने लगे और 'कानन कुसुम', 'महाराणा का महत्व', 'करुणालय' और 'प्रेम पथिक' प्रकाशित हुए।

प्रसाद जी का जीवन कुल 48 वर्ष का रहा है। इसी में उनकी रचना प्रक्रिया विभिन्न साहित्यिक विधाओं में प्रतिफलित हुई। प्रसाद की प्रेरणा से ही 1909 ई० में उनके भांजे अंबिका प्रसाद गुप्त के सम्पादकत्व में 'इन्दु' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। जिसमें वे नियमित रूप से लिखते रहे। सन् 1912 ई० में 'इंदु' में ही उनकी पहली कहानी 'ग्राम' प्रकाशित हुई। प्रसाद जी ने 72 कहानियाँ और कुल 13 नाटकों की सर्जना की। आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में इनकी रचनाओं का गौरव अतुलनीय है।

जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ

कविताएँ :- ~~कामायनी~~, कानन कुसुम, प्रेम पथिक (प्रबंध काव्य), महाराणा का महत्व, झरना, आँसू, लहर, कामायनी, ~~उर्वशी~~ उर्वशी
(केवल झरना से लेकर कामायनी तक छायावादी कविता है)

कहानी/कहानी संग्रह :- छाया, आकाशदीप, आँधी, इन्द्रजाल, पुरस्कार, प्रतिध्वनि, ग्राम, गुंडा, चूड़ी वाली नीरा

उपन्यास :—

कंकाल, तितली, इरावती (अधूरा)

निबंध :—

काव्य और कला तथा अन्य निबंध,
यथार्थ और छायावाद, रंगमंच,
मौर्यों का राज्य परिवर्तन

एकांकी :— एक घूँट

नाटक :— करुणालय (गीतिकाव्य), ध्रुवस्वामिनी, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, विशाख, जनमेजय का नागयज्ञ, कल्याणी परिणय कामना

विशेष

प्रसाद-संगीत :— (नाटकों में प्रयुक्त गीतों का एकत्र संकलन

चित्राधार :— (ब्रजभाषा में रचित काव्य का संग्रह)

प्रसाद की काव्य भाषा माधुर्य और प्रसाद गुण से पूर्ण है। उसमें कोमलता का गुण सर्वत्र विद्यमान है। बंगला की कोमलकांत पदावली की संरचना का प्रभाव भी उस पर देखा जा सकता है। सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति में लाक्षणिकता उनकी काव्य भाषा को अत्यंत समृद्ध करती है।

चित्रात्मकता, नाद सौन्दर्य उनकी काव्य भाषा के विशिष्ट गुण हैं। प्रतीक योजना में उनकी मौलिकता और कल्पनाशीलता आद्वितीय है।

=